8. विशिष्ट बच्चे

यद्यपि सभी बालकों का गर्भकालीन विकास लगभग समान रूप से होता है। किन्तु फिर भी जन्म के बाद यह देखा गया है कि सभी बालकों का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास समान नहीं होता है। इस अन्तर का कारण अनुवांशिकता और वातावरण की भिन्नता है। अत: विकास क्रम में विभिन्नतायें पायी जाती है। ये विभिन्नतायें, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक और शैक्षिक किसी भी क्षेत्र में हो सकती है। कोई बालक अधिक बुद्धिमान होता है तो कोई मूर्ख किसी का व्यक्तित्व प्रतिभाशाली होता है। तो किसी का निकृष्ट। कोई बहुत अधिक लोकप्रिय होता है। तो कोई एकांतप्रिय इस प्रकार कुछ बालक अपनी आयु के बच्चों के समान होते है। किन्तु कुछ आगे और पीछे। अत: बालक अपनी आयु समूह के मानदण्डों के अनुसार शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक और संवेगात्मक तथा अन्य किसी क्षमता में कम या अधिक होता है या समान्य व्यक्ति से भिन्न प्रकार की क्षमतायें रखता है। उसे विशिष्ट या असाधारण कहा जाता है। **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार**–विशिष्ट या असाधारण शब्द ऐसे गुणों या ऐसी गुणों वाले व्यक्ति के अनुसार किया जाता है। जो कि सामान्य व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इसके कारण ही उसकी व्यावहारिक प्रतिक्रियाऐं प्रभावित होती है।

''विशिष्ट बालक वह बालक होते है जो अन्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भाषायीक और सामाजिक तौर पर इस सीमा तक भिन्न होते है कि उन्हें सामान्य जीवन जीने के लिए तैयार करने हेतु प्रयासों की आवश्यकता होती है।''

I. शारीरिक अक्षमता से युक्त बालक:–

वे बालक जिनमें किसी प्रकार का शारीरिक दोष या विकृति होती है। ये दोष जन्मपात भी हो सकते है। जन्म के समय प्रसव की असावधानी से हो जाते है या दुर्घटना, बीमारी, चोट के कारण हो सकते है। वे बच्चे शारीरिक रूप से **अक्षम** कहलाते हैं। क्योंकि इनकी शारीरिक कमी उनकी सामान्य क्रियाओं को प्रभावित करती है। जिससे इनके समायोजना में कठिनाई होती है। वे बालक मानसिक रूप से स्वस्थ समायोजन में असफल होने पर ये बालक हीनभावना का शिकार हो जाते है। **क्रो और क्रो के अनुसार**–वे बालक शारीरिक रूप से अक्षम कहे जाते है। जिनके शारीरिक दोष उन्हें शारीरिक क्रियाओं में भाग लेने से रोकते हैं अथवा सीमित रखते हैं।

शारीरिक रूप से अक्षम बालकों के प्रकार:–

1. **अंधे और कमजोर नजर वाले बालक**–अंधे बालक वह होते हैं जिन बालकों को बिलकुल भी दिखाई नहीं देता है। अन्धे बालकों को विद्यालय में ब्रेल पद्धति से शिक्षा दी जाती है। इसमें शब्द उभरे हुए होते है इन उभरे शब्दों को बालक छूकर महसूस कर सकता है ऐसे बालकों को हस्तकला या गायन की शिक्षा दी जानी चाहिए। इन बालकों को अस्पताल, पोस्ट ऑफिस, सड़क पर चलने व बस में सफर करने जैसे अनुभवों का भी ज्ञान करना चाहिए। कमजोर नजर वाले बालक वे होते हैं जिन्हें दिखायी तो देता है किन्तु बहुत कम मात्रा में। इन बालकों को अंधे बालकों की तुलना में शिक्षा देना आसान होता है। इन बच्चों के लिए श्यामपट्ट पास में रखें। कक्षा में उचित प्रकाश व्यवस्था हो, बड़े अक्षरों वाली पुस्तकों का प्रयोग करें तथा समय-समय पर नेत्र परीक्षण एवं इलाज करवायें।

चित्र 8.1 : ब्रेल पद्धति

2. मूक एवं बधिर तथा कम सुनने वाले– बालक वे बालक हैं जो बोलने एवं सुनने में असमर्थ होते हैं। जो बालक जन्म से ही सुन पाने में असमर्थ होते हैं वे बोलना नहीं सीख पाते क्योंकि इनकी बोल-चाल की इन्द्रियों का विकास नहीं हो पाता। जो बालक बोलना सीखने के बाद श्रवण शक्ति खोते है वे बोल तो सकते है किन्तु सुनने में असमर्थ होते है। कई बार बालकों की सुनने की शक्ति तो ठीक होती है किन्तु वाक् कोषों के दोष या अन्य किसी कारणवश वे ठीक प्रकार से बोल नहीं पाते। मूक बधिर बालकों को मूक-बधिर विद्यालय में भेजना चाहिए जहां उन्हें ओष्ठ पठन विधि द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। इन्हें समझाते समय इशारों का प्रयोग करना चाहिए ताकि वे जल्दी समझ सकें। आंशिक बधिरता में श्रुति साधनों का उपयोग लाभकारी होता हैं। इन बालकों को दस्तकारी या अन्य घरेलू उद्योग-धन्धों का प्रशिक्षण देना चाहिए।

चित्र 8.2 : सांकेतिक भाषा

3. अपंग बालक–जिनकी मॉसपेशियाँ व अस्थियाँ पूर्ण विकसित नहीं होती है। जिससे वे चलने-फिरने तथा अन्य किसी कार्य को करने में अक्षम या असमर्थ होते है। अपंग कहलाते है। बालक दुर्घटना या रोग के कारण या गर्भावस्था में ही विकलांग हो जाते है। अपंग बालक साधारण अवस्था में अपनी हड्डियों या मांसपेशियों का ठीक-ठाक प्रयोग नहीं कर पाते है। ऐसे बालकों के लिए अपंगता के अनुसार विशिष्ट उपकरण जैसे कृत्रिम हाथ, पैर, व्हील चेयर आदि का उपयोग किया जाना चाहिए। अधिक अपंग बालकों को उनके लिए अलग से बने विशिष्ट विद्यालयों में शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्हें इस प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा दी जायें जिसमें उसकी शारीरिक अक्षमता बाधक नहीं हो। कम अपंग बालकों को विविध क्रियाओं व्यायाम, खेलकूद आदि के द्वारा सामान्य बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

4. भाषा दोषयुक्त बालक–जो बालक स्पष्ट: उच्चारण नहीं कर पाते है। धीरे-धीरे बोलते है। हकलाते है, तुतलाते है तथा अटक-अटक कर बोलते है। भाषा दोषयुक्त बालक कहलाता है। वाणी का दोष शारीरिक या मानसिक कारणों से हो सकता है। छोटी आयु के वाक् दोषों को अधिक आसानी से दूर किया जा सकता है। अत: इन बालकों को

चित्र 8.3 : अपंग बालक

नाक, कान व गले को विशेषज्ञ को दिखाएँ। बोलने का ठीक-ठाक अभ्यास कराये। इनके सामने कभी भी तुतलाकर या अशुद्ध भाषा में ना बोले तथा इन्हें विविध प्रकार से खेलों तथा व्यावसायिक प्रशिक्षिणों जैसे लकड़ी का काम, बुनना, दर्जी का काम, मिट्टी के खिलौने बनाना, चित्रकला, मूर्तिकला आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

5. नाजुक बालक–नाजुक बालक शारीरिक रूप से दुबले-पतले और कमजोर होते हैं। इनमें कार्य क्षमता कम होती है। शरीर में पौष्टिक तत्वों की कमी, लम्बे समय तक चलने वाली बीमारी या दोष पूर्व रचना आदि के कारण बालक निर्बल हो जाते हैं। उचित देखरेख के प्रभाव में इनकी शारीरिक अक्षमता बढ़ती जाती हे। ऐसे बालकों को ज्यादा थकाने वाले खेल न खेलने देवे, पढ़ाई के बीच-बीच में आराम दें।

II.मानसिक विकार युक्त बालक :–

मंद बुद्धि बालकों से अभिप्राय उन बालकों से है। जो अपनी आयु के बालकों के समान मानसिक रूप से अपरिपक्व होते हैं। उनका विकास सामान्य रूप से कम होता है तथा कुछ तो इतने अधिक अपरिपक्व होते हैं कि अपने जीवन निर्वाह की सामान्य क्रियायें जैसे–भोजन ग्रहण करना, वस्त्र पहनना, मल-मूत्र त्याग करने के लिए हर पल दूसरे की सहायता की आवश्यकता होती है। इन बालकों में शारीरिक कमी कोई नहीं होती है। शारीरिक रूप से ये सुन्दर व हष्ट-पुष्ट हो सकते हैं किन्तु बौद्धिक विकास न्यून होता है। इनके सीखने की गति धीमी होती है या नहीं होती है। इस प्रकार के बालकों को सभी प्रकार के समायोजना में बाधा आती है।

1. मानसिक विक्षिप्तता:–विविध वंशानुगत कारकों के फलस्वरूप जन्म से पहले या बाद में तीव्र दीर्घकालिक कुपोषण के फलस्वरूप या फिर किसी दुर्घटना के सदमें के कारण हो सकती है। फलत: बालक की सामान्य बुद्धि का क्षय हो जाता है।

2. मंद बुद्धि:–बालकों की बुद्धि लब्धि 70-85 से कम होती है व इनका शारीरिक विकास भी धीमी गति से होता है तथा इन बालकों

का अन्य व्यक्तियों से समायोजन कठिन होता है। इन बालकों में निम्न विशेषताएँ देखी जाती है:-

(i) इनकी निरीक्षण शक्ति तथा स्मरण शक्ति बहुत निर्बल होती है।

(ii) ये सीखने में त्रुटियाँ अधिक करते है।

(iii) ये बहुत अल्प समय के लिये ध्यान केन्द्रित कर पाते है।

(iv) ये सीखी गई बातों का उपयोग नई परिस्थितियों में नहीं कर पाते है।

(v) ये बालक परीक्षा में बार-बार अनुत्तीर्ण होते है। अतएव अपनी आयु के अनुसार छोटी कक्षाओं में रह जाते है।

(vi) विद्यालय में असफलता के कारण शीघ्र निराश हो जाते है।

(vii) ये बौद्धिक कार्यों की अपेक्षा शारीरिक कार्यों से अधिक रुचि लेते है।

(viii) दूसरों की बजाय अपनी अधिक चिन्ता करते है।

(ix) इनकी संवेदनशीलता अति तीव्र होती है तथा छोटी से छोटी बात भी इन्हें चुभ जाती है। ये अपने संवेगों को रोक पाने में भी असमर्थ होते है।

(x) दूसरों से बातचीत करते समय ये कहते कम तथा सुनते अधिक है।

(xi) इन बालकों में आत्म विश्वास का अभाव होता है अत: ये निर्णय नहीं ले पाते।

(xii) इन बालकों की संकल्प शक्ति (Determination power) बहुत कम होती है अतएव ये किसी बात का दृढ़ निश्चय नहीं कर पाते।

(xiii) ये बालक सूक्ष्म विषयों पर विचार नहीं कर पाते इसलिये व्याकरण, गणित तथा विज्ञान आदि विषयों में इनकी रुचि नहीं होती है।

(xiv) इन बालकों के दाँत देर से निकलते है तथा चलने तथा खड़े होने की क्षमता इनमें देर से आती है, बोलना भी ये देर से सीखते है।

मंद बुद्धि बालकों की शिक्षा में शारीरिक क्रियाओं को प्रमुखता देनी चाहिये। ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण द्वारा इन बालकों की निरीक्षण शक्ति बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिये। मंदबुद्धि बालकों की रुचियों को विकसित करके उन्हें संगीत तथा चित्रकला आदि की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

इस प्रकार शारीरिक एवं मानसिक रूप से असक्षम बालकों के लिए हमें चाहिए कि हम सबसे पहले उन्हें अपने समान एक सामान्य सामाजिक उपयोगी सदस्य समझें। उनके प्रति किसी प्रकार की कृपा या दया भाव न रखकर उन्हें सम्पूर्ण स्नेह प्रदान करें। सामुदायिक सुविधाओं में उनका खास ख्याल रखें जैसे साईन बोर्डों का स्पष्ट होना तथा ऊंचे नीचे होने की बजाय धरातल पर होना। उनके आत्मविश्वास को जगायें, उन्हें विशिष्ट रोजगार परक प्रशिक्षण देवें तथा उनके द्वारा बनाई गई कलाकृतियों को प्रदर्शित करें। समय-समय पर प्रोत्साहित करें।

III. प्रतिभाशाली बालक (Gifted Children)

जहाँ एक ओर निम्न बुद्धि-लब्धि के आधार पर कुछ बालकों को मंद बुद्धि कहा जाता है वही औसत से अधिक बुद्धि-लब्धि होने पर बालकों को '**प्रतिभाशाली**' कहा जाता है। इनकी बुद्धि-लब्धि 130-140 से अधिक होती है।

टरमैन के अनुसार, ''140 बुद्धि-लब्धि से ऊपर वाले बालक प्रतिभावन माने जाते हैं।''

प्रतिभाशाली बालक सामान्य बच्चों से भिन्न होते है। इन का स्वास्थ्य सामान्य की तुलना में अच्छा होता है। व्यक्तित्व आकर्षक होता है। इन बच्चों में ध्यान केन्द्रित करने की योग्यता, ग्रहणशीलता समायोजन की क्षमता, संवेगात्मक परिपक्वता, और तर्क करने की अधिक क्षमता होती है।

प्रतिभाशाली बालकों के लिए विद्यालय में अलग कक्षाओं की व्यवस्था, विस्तृत पाठ्यक्रम, शिक्षकों द्वारा व्यक्तिगत शिक्षण पुस्तकालय की सुविधा प्रोत्साहन और पुरस्कार व अतिरिक्त सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था की जा सकती है। प्रतिभाशाली बालकों के माता-पिता व अभिभावकों को सर्वप्रथम अपने बच्चों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट करना चाहिए। उन्हें स्वतन्त्रता, साधन व सुविधाएँ देनी चाहिए।

IV. अपचारी बालक

जब कोई व्यक्ति समाज के नियमों को तोड़ता है या नियम विरुद्ध कार्य करता है तो उसे 'अपराधी' कहा जाता है और जब इन्हीं सामाजिक नियमों को बालक तोड़ता है तो उसे 'अपचारी बालक' कहा जाता है। बाल अपराध के कई वंशानुगत व वातावरण संबंधी कारक है। बाल अपराधों को रोकने के लिए पारिवारिक, विद्यालयी प्रयास व सामाजिक प्रयास किए जाने चाहिए।

V. समस्यात्मक बालक

प्रत्येक बालक को जीवित रहने के लिए नये वातावरण में समायोजन करना पड़ता है। सामान्य बालक जब वातावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते है तो समस्यात्मक बन जाते है। जब बालकों की इच्छा की पूर्ति ना हो, परिवार व समाज का उचित मार्गदर्शन ना हो, प्रेम का अभाव हो, कठोर नियन्त्रण हो, उनकी उपेशा हो इन समस्याओं का निरन्तर उन की जीवन में आने से उनके व्यवहार को समस्यात्मक बना देती है। कुछ प्रमुख समस्यात्मक व्यवहार

(1) अंगूठा चूसना

(2) नाखून काटना

(3) बिस्तर गीला करना

(4) झूठ बोलना

(5) चोरी करना

(6) हकलाना

(7) दिवास्वप्न देखना

(8) भयभीत बालक

(9) विध्वस्कारी बालक

(10) ईर्ष्यालु बालक

(11) क्रोधी बालक आदि

माता-पिता, शिक्षक व अन्य लोग प्रारंभ से ही बालक की समस्या का निराकरण उचित निर्देशन द्वारा करें तो उनका व्यवहार थोड़े समय में सामान्य हो सकता है।

महत्वपूर्ण बिन्दुः-

1. आनुवांशिकता और वातावरण में असमानता के कारण बालकों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा अन्य प्रकार के गुणों में सार्थक भिन्नता पाई जाती है।
2. जिन बालकों के गुण समूह मानदण्डों के अनुरूप होते है उन्हें सामान्य बालक कहते है तथा जिन बालकों में समूह मानदण्डों की अपेक्षा कम या अधिक गुण पाये जाते है उन्हें विशिष्ट या असाधारण बालक कहते है।
3. असाधारण बालक विभिन्न प्रकार के होते है। असाधारणता उनकी बुद्धि, शरीर, सामाजिक व्यवहार, समायोजन, संवेग भाषा आदि किसी भी एक या अधिक क्षेत्रों से संबंधित होती है।
4. शारीरिक रूप से असक्षम बालक जन्म से या फिर किसी दुर्घटना या भयंकर रोग के कारण ऐसे हो जाते है। इस शारीरिक असक्षमता के कारण उनकी वृद्धि, विकास एवं सीखने की क्षमता सामान्य तरीके से नहीं हो पाती।
5. शारीरिक असक्षमता विभिन्न प्रकार की होती है जैसे अपंग, अन्धे, या कमजोर, नजर वाले, मूक बधिर, कम सुनने वाले, निर्बल या नाजुक एवं हकलाने या दोषयुक्त वाणी वाले। उपयुक्त शिक्षा और प्रशिक्षण देकर इन्हें भी समाज का उपयोगी सदस्य बनाया जा सकता हैं।
6. बालक जो मानसिक रूप से विक्षिप्त हो, किसी भयंकर रोग, दुर्घटना या घटना के कारण अपना दिमागी संतुलन खो चुके हों या जिनमें पागलपन के लक्षण हो, उन्हें मानसिक रूप से असक्षम या मंद बुद्धि बालक कहते हैं।
7. मानसिक विक्षिप्तता विविध वंशानुगत कारकों के फलस्वरूप जन्म से पहले या बाद में तीव्र दीर्घकालिक कुपोषण के फलस्वरूप या फिर किसी दुर्घटना के कारण हो सकती है।
8. मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति स्वयं अपना काम करने एवं अपनी सहायता करने के अयोग्य होते है। इन बालकों की छोटे बच्चों की तरह देखभाल और सुरक्षा करनी पड़ती है।
9. शारीरिक एवं मानसिक रूप से असक्षम बालकों को अपने समाज एक सामान्य सामाजिक उपयोगी सदस्य समझें।
10. जिन बालकों की बुद्धिलब्धि 130-140 से अधिक होती है वह प्रतिभाशाली बालक है।
11. अपचारी व समस्यात्मक बालकों को पारिवारिक, विद्यालय व सामाजिक प्रयास किए जाने चाहिए जिससे उनकी समस्याओं को ठीक किया जा सकें।

अभ्यासार्थ प्रश्न-

1. निम्न प्रश्नों सही उत्तर चुनें-

1. जिन बालकों के गुण समूह मानदण्ड़ों की अपेक्षा कम या अधिक होते है, उन्हें कहते है-
   (अ) साधारण बालक (ब) अपंग बालक
   (स) असाधारण बालक (द) मंद बुद्धि बालक
2. बालकों में शारीरिक असक्षमता हो सकती है -
   (अ) जन्म जात (ब) दुर्घटना के कारण
   (स) किसी भयंकर रोग के कारण (द) उपरोक्त सभी
3. मंद बुद्धि बालकों की शिक्षा में प्रमुखता देनी चाहिए -
   (अ) मानसिक क्रियाओं को (ब) शारीरिक क्रियाओं को
   (स) तनावों को (द) उपरोक्त में से कोई भी नहीं
4. बौद्धिक कुशलता में पिछड़े हुए बालकों को कहते हैं-
   (अ) दुर्बल (ब) निर्बल
   (स) निडर (द) मंद बुद्धि बालक
5. मंद बुद्धि बालकों की बुद्धि लब्धि ..... से कम होती हैं।
   (अ) 70-85 (ब) 90-95
   (स) 95-100 (द) 105-110

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. उचित प्रकार से ..... और ..... देकर असक्षम बालकों को भी समाज का उपयोगी सदस्य बनाया जा सकता है।
2. पूर्णतया अन्धे बालकों को अंध विद्यालय में ..... पद्धति से शिक्षा दी जानी चाहिए।
3. बालक जो बोलने एवं सुनने में असमर्थ होते है उन्हें कहते है ..... बालक।
4. शरीर में पौष्टिक तत्वों की कमी, लम्बे समय तक चलने वाली बीमारी या दोषपूर्ण रचना आदि के कारण बालक ..... हो जाते है।
5. मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति स्वयं अपना काम करने एवं अपनी सहायता करने के ..... होते है।

6. मंद बुद्धि बालकों की रुचियां को विकसित करके उन्हें ..... तथा ..... आदि की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
7. प्रतिभाशाली बालकों की बुद्धि लब्धि ..... से अधिक होती है।

3. असाधारण या विशिष्ट बालक हो परिभाषित कीजिए
4. टिप्पणी लिखो–
   1. समस्यात्मक बालक
   2. अपचारी बालक
   3. प्रतिभाशाली बालक
5. बालक शारीरिक एवं मानसिक रूप से असक्षम किन-किन कारणों से हो सकता है?
6. मंद बुद्धि बालक को भी समाज का एक उपयोगी सदस्य बनाया जा सकता है? कैसे ? उदाहरण सहित समझाइये।
7. आपके पड़ौस में एक शारीरिक रूप से अपंग बालक है। आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे? कक्षा में अध्यापक की सहायता से चर्चा करें।

उत्तरमाला–

1. (1) स (2) द (3) ब
   (4) द (5) अ
2. (1) शिक्षा, प्रशिक्षण (2) ब्रेल (3) मूक-बधिर
   (4) निर्बल (5) अयोग्य (6) संगीत, चित्रकला
   (7) 130-140